ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. NO.- 229-232

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

# जनपद मऊ (उ0प्र0) में भू–जोत के आकार का परिवर्तित स्वरूप : एक भौगोलिक अध्ययन

**डडेश कुमार**

शोध अध्येता– भूगोल विभाग, संत गणिनाथ राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुहम्मदाबाद, गोहना मऊ (उ0प्र0) भारत

**Received-12.06.2024, Revised-19.06.2024, Accepted-24.06.2024** **E-mail : aaryvart2013@gmail.com**

***सारांश–*** *अध्ययन क्षेत्र जनपद मऊ में जोत के आकार में हुए परिवर्तन के अध्ययन हेतु दो कृषि संगणनाओं को आधार माना गया है। अध्ययन क्षेत्र में पिछले दस वर्षों में विभिन्न वर्ग के जोतो की संख्या तथा क्षेत्रफल में बहुत अधिक परिवर्तन हुए है। अध्ययन क्षेत्र के सीमांत जोत के अन्तर्गत वृद्धि हुई है, किन्तु लघु, अर्धमध्यम, मध्यम एवं वृहत जोतो की संख्या में कमी हुई है। इसके विपरीत कुल क्षेत्र में सीमांत कृषि का क्षेत्र बढ़ा है जबकि लघु, अर्धमध्यम, मध्यम एवं वृहत जोत का आकार बढ़ा है। अध्ययन क्षेत्र में वृहत जोत तेजी से टूट रहे है। मध्यम आकार के जोतों की संख्या तथा उनके क्षेत्रफल में सबसे अधिक कमी हुई है। अर्धमध्यम आकार के जोतों की कुल संख्या में कमी हुई है, जबकि इसके क्षेत्रफल में भारी मात्रा में कमी हुई है। इस प्रकार के जोतों के आकार में हो रहा परिवर्तन का कारण बंटवारे में मध्यम एवं वृहत आकार के जातों के टूटकर छोटा होना तथा कुछ मामलों में लघु जोतों (1 से 2 हेक्टेयर) में भूमि क्रय करने से इस वर्ग में जोतों के क्षेत्रफल में वृद्धि हो रही है। लघु जोतों के आकार में परिवर्तन का क्रम जारी है। अध्ययन क्षेत्र में लघु जोतों की संख्या और क्षेत्रफल दोनों में कमी हुई है। सभें परिवर्तन का कारण अर्धमध्यम एवं मध्यम आकार के जोतों का बंटवारे के द्वारा टूटना और कुछ सीमांत कृषकों के द्वारा जोतों के क्षेत्रफल में वृद्धि है। इसके अतिरिक्त अध्ययन क्षेत्र की परती एवं बंजर भूमि को कृषि के अन्तर्गत लाया गया है तथा इन्हें भूमिहीन श्रमिकों को बाटा गया है। जिसके लघु जोतो के क्षेत्रफल में परिवर्तन देखा गया है।*

*सीमांत आकार के जोत सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, क्योंकि न केवल इसके अन्तर्गत संख्या बहुत अधिक है, वरन ये उस गरीब तबके के लोग है, जिनका जीवन बड़ी कठिनाई से गुजर रहा है। कुल जोतों की एक–तिहाई से भी अधिक संख्या सीमांत जोतों की है तथा इसके अंतर्गत कुल कृषि भूमि का आधी से अधिक संख्या सीमांत जोतों की है। इसका तात्पर्य यह भी है कि अध्ययन क्षेत्र के लगभग एक–तिहाई कृषक अत्यंत गरीब हैं, और इन्हे आजीविका बनाए रखने के लिए कृषि श्रमिकों अथवा गैर कृषि क्षेत्र में काम करना होता है। इसकी संख्या और क्षेत्रफल में लगातार वृद्धि हो रही है।*

*सीमांत जोतों के क्षेत्रफल में वृद्धि की गति कम है पर इसकी संख्या में अधिक वृद्धि हो रही है। सीमांत जोतों की संख्या में लगातार वृद्धि होने के कारण मध्यम एवं लघु आकार के जोतों का टूटना है। इसके अतिरिक्त कृषि श्रमिकों एवं वेतन भोगी कर्मचारियों द्वारा थोड़ी कृषि भूमि क्रय करने से इसकी संख्या में वृद्धि हो रही है। अतः अध्ययन क्षेत्र में सीमांत जोत में वृद्धि हो रही है, जबकि वृहत आकार के जोतों की संख्या एवं क्षेत्रफल में कमी आ रही है। मध्यम एवं अर्धमध्यम आकार के जोत लगभग स्थित हैं अथवा इनमें बहुत सामान्य परिवर्तन हुआ है।*

***कुंजीभूत शब्द–*** *भू–जोत, भूमि संसाधन, जोत का आकार, कृषि क्षेत्र, भौगोलिक स्थिति, भूमि उपयोग, कृषिगत भूमि, सीमांत जोतों।*

**प्रस्तावना–** वर्तमान समय का भूमि उपयोग वस्तुतः एक भूमि संसाधन उपयोग है, जो मानवीय अर्थव्यवस्था की पूर्वावस्था से विकसित होकर आज क्रमशः व्यापारिक कृषि तथा गैर प्राथमिक क्रिया कलापों की ओर अग्रसर हो रहा है, वास्तव में क्षेत्रीय आधार पर भूमि उपयोग प्राकृतिक अवस्था से अन्तिम अवस्था तक परिवर्तन भी विभिन्न परिस्थितियों के कारण भिन्न–भिन्न दृष्टिगोचर होती है। इसलिए भूमि उपयोग भौगोलिक अध्ययन में एक रूचिकर एवं कल्याणकारी विषय हो जाता है तथा इससे सम्बन्धित तुलनात्मक पक्षों का विश्लेषण भूमि संसाधन की आर्थिक संकल्पना, भूमि उपयोग की व्यावहारिक संकल्पना जैसी नई संकल्पनाओं को जन्म देती है, जो सम्मिलित रूप से भूमि उपयोग की विषय वस्तु को इंगित करता है। इस प्रकार संकाल्पनिक व्याख्या से स्पष्ट होता है, कि भूमि उपयोग विकास की विशिष्ट परिस्थितियों एवं अवस्थाओं का द्योतक है। अतः कुछ अर्थशास्त्रियों ने भूमि उपयोग के स्थान पर 'भूमि संसाधन उपयोग' शब्द का प्रयोग किया। इस सन्दर्भ में इनका कथन है कि जब मनुष्य भूमि का उपयोग अपनी आवश्यकताओं एवं इच्छाओं के अनुरुप करने में सक्षम हो जाता है, तो उस समय भूमि एक संसाधन के रूप में परिणित हो जाती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि जब किसी क्षेत्र का भूमि उपयोग वहां की आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं को सुलझाने में, क्षेत्र के विकास हेतु मानवीय इच्छानुसार सम्पन्न हो रहा हो और प्राकृतिक पर्यावरण का प्रभाव कम हो, तो उस अवस्था को भूमि ससाधन उपयोग कहा जा सकता है।

**अध्ययन का उद्देश्य–** प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र जनपद मऊ में भू–जोतों के आकार में परिवर्तन से भूमि संसाधन एवं कृषि भूमि में हो रहे कालिक परिवर्तन को प्रकाश में लाना है। जिसके आधार पर भूमि संसाधन का विकास किया जा सके।

**साहित्यावलोकन–** किसी भी क्षेत्र में पाये जाने वाली भू–जोतों का उपयोग वहाँ की जनसंख्या की कार्य कुशलता ही भूमि उपयोग के प्रतिरूप का निर्धारण करती है। अध्ययन क्षेत्र जनपद मऊ भूमि संसाधन से परिपूर्ण है। भूमि उपयोग का स्वरूप जनसंख्या की वृद्धि के साथ–साथ बदलता जाता है। यहाँ निवास करने वाली जनसंख्या भूमि संसाधन को पूर्ण रूप से नवाचार विधियों के द्वारा उपयोगी स्वरूप जनसंख्या के सन्दर्भ में भूमि का पूर्ण उपयोग सम्भव नहीं हो सका।

**परिकल्पना–** जनपद मऊ में भू–जोतों के आकार का प्रभाव वहाँ निवास करने वाली जनसंख्या के साथ ही साथ सरकार द्वारा निर्धारित नवाचार की नीतियों पर निर्भर करता है। अध्ययन क्षेत्र में भू–जोतों के आकार एवं जनसंख्या गतिशीलता में सह–सम्बन्ध पाया जाता रहा है। इस क्षेत्र में निवास करने वाली जनसंख्या का जीवन स्तर भूमि संसाधन के विकास पर ही निर्भर करता है। अल्प विकास के प्रमुख कारणों में भूमि का उपयोग परम्परागत विधि से माना जा सकता है। कृषि भूमि के विकास के लिए अनुकूलतम कृषि भूमि प्रबन्धन की आवश्यकता है।

**विश्लेषण एवं व्याख्या– भू–जोत का आकारः** भू–जोत का आकार शस्य प्रतिरूप एवं उत्पादन को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करता है। जोत के आकार का उस क्षेत्र के किसानों के जीवन स्तर से घनिष्ठ धनात्मक सह सम्बन्ध होता है। जोत के आकार पर कृषि का पैमाना, उत्पादन तकनीक, कृषि यंत्रों की संख्या तथा आकार, यांत्रिक शक्ति निवेश की मात्रा और कृषि उत्पादन क्षमता पर निर्भर होता है।

**अनुरुपी लेखक/संयुक्त लेखक**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

जोत का आकार कृषि पद्धति के चुनाव की आधारभूत इकाई है। किसी भी क्षेत्र विशेष का कृषि प्रतिरूप उस क्षेत्र के जोत के औषत आकार, भौतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों के परस्पर प्रक्रिया के सम्मिलित प्रभावों का द्योतक है।

अध्ययन क्षेत्र जनपद मऊ में कृषि संगणना 2015–16 के अनुसार जोतों की संख्या 242339 है, इनमें से 84.64 प्रतिशत सीमांत आकार (ढ1हेक्टेयर) तथा 7.34 प्रतिशत लघु जोता (1–2 हेक्टेयर) के जोत है। शेष 2.55 प्रतिशत अर्द्धमध्यम, 0.43 प्रतिशत मध्यम जोत, एवं 0.02 प्रतिशत वृहत जोत है। जबकि जोतों के क्षेत्रफल का कुल 61.07 प्रतिशत सीमांत जोत एवं 20.55 प्रतिशत लघु जोत के अन्तर्गत है। किन्तु अर्द्धमध्यम (13.27 प्रतिशत), मध्यम (4.46 प्रतिशत) एवं वृहत जोत (0.62 प्रतिशत) के अन्तर्गत क्षेत्रफल का प्रतिशत जोतो की संख्या से कम है। अध्ययन क्षेत्र के आकार समूहों के अनुसार जोतों का प्रादेशिक वितरण तालिका संख्या 1.1 में निम्नानुसार है:

**तालिका संख्या : 1.1**

**जनपद मऊ : जोत का आकार (2015–16)**

| क्र0सं0 | जोत का वर्गीकरण | जोतो की संख्या | प्रतिशत | जोतो का क्षेत्रफल (हे0) | प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | सीमान्त जोत | 217243 | 89.64 | 78856 | 61.07 |
| 2 | लघु जोत | 17790 | 7.34 | 26534 | 20.55 |
| 3 | अर्धमध्यम जोत | 6199 | 2.55 | 17144 | 13.27 |
| 4 | मध्यम जोत | 1052 | 0.43 | 5765 | 4.46 |
| 5 | वृहत जोत | 55 | 0.02 | 811 | 0.62 |
| | कुल जोत | 242339 | 100.00 | 129110 | 100.00 |

**सीमांत जोत–** एक हेक्टेयर से कम आकार के कृषि जोतों को सीमांत जोत के अंर्तगत सम्मिलित किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में सीमांत जोत की संख्या सबसे अधिक है। इसके अर्न्तगत कुल जोत की संख्या 89.46 प्रतिशत है। परन्तु इसके स्वामित्व में 61.07 प्रतिशत क्षेत्र है जो कि सर्वाधिक क्षेत्र को दर्शाता है। अतः सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र में सीमांत जोतों का क्षेत्रफल जोतों की संख्या के प्रतिशत से लगभग 28 प्रतिशत कम है। यद्यपि अध्ययन क्षेत्र के दो–तिहाई कृषक सीमांत जोत के अंतर्गत है और इनके पास कृषि भूमि का 61.07 प्रतिशत भाग है। अध्ययन क्षेत्र में ये कृषक अत्यन्त गरीब एवं अल्प साधन वाले है।

विकासखण्डवार सीमांत जोतों की सर्वाधिक संख्या रानीपुर 32361 तथा क्षेत्र 12536 हेक्टेयर है, जबकि न्यूनतम सीमांत जोतों की संख्या फतेहपुर मण्ड़ाव 20871 है तथा क्षेत्र 6476 हेक्टेयर है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में सीमांत जोतों की संख्या और क्षेत्र क्रमशः विकासखण्ड दोहरीघाट (संख्या 22317, क्षेत्र 8043हे0), फतेहपुर मण्ड़ाव (संख्या 20871, क्षेत्र 6476), घोसी (संख्या 22742, क्षेत्र 4448हे0), बड़रांव (संख्या 22060, क्षेत्र 7101हे0), कोपागंज (संख्या 22660, क्षेत्र 11502हे0), परदहा (संख्या 21453, क्षेत्र 9403हे0), रतनपुरा (संख्या 22251, क्षेत्र 8966हे0), मुहम्मदाबाद गोहना (संख्या 26871, क्षेत्र 9624), रानीपुर (संख्या 32361, क्षेत्र 12536हे0) है(तालिका संख्या : 1.2)।

अध्ययन क्षेत्र के मैदानी भू–भाग में सीमांत कृषकों की संख्या अधिक है। इस क्षेत्र के सीमांत कृषक अर्द्धबेरोजगारी से पीड़ित है, जिन्हे वर्ष के कुछ माह ही रोजगार मिल पाता है बाकी अन्य माह में रोजगार की तलाश में शहरों या विदेशों को पलायन कर जाते है।

**तालिका संख्या : 1.2**

**जनपद मऊ : जोत के आकार का वितरण वर्ष (2015–16)**

| क्र म | विकासखण्ड | सीमांत जोत (1 हे0 से कम) | | लघु जोत (1 हे0 से 2 हे0) | | अर्द्धमध्यम जोत (2–4हे0) | | मध्यम जोत (4–10हे0) | | वृहत जोत (10 हे0 से अधिक) | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सं0 | | संख्या | क्षेत्रफल | संख्या | क्षेत्रफल | संख्या | क्षेत्रफल | संख्या | क्षेत्रफल | संख्या | क्षेत्रफल |
| 1 | दोहरीघाट | 22317 | 8043 | 1885 | 3068 | 639 | 1789 | 105 | 514 | 2 | 9 |
| 2 | फतेहपुर मण्डाव | 20871 | 6476 | 2285 | 3532 | 767 | 2352 | 128 | 646 | 32 | 465 |
| 3 | घोसी | 22742 | 4448 | 1955 | 4172 | 680 | 1873 | 119 | 663 | 3 | 36 |
| 4 | बडरांव | 22060 | 7101 | 1819 | 3145 | 616 | 1823 | 99 | 643 | 1 | 11 |
| 5 | कोपागंज | 22660 | 11502 | 2177 | 3362 | 720 | 1982 | 136 | 645 | 0 | 0 |
| 6 | परदहा | 21453 | 9403 | 1796 | 2042 | 610 | 1566 | 107 | 544 | 0 | 0 |
| 7 | रतनपुरा | 22251 | 8966 | 1911 | 2638 | 818 | 2201 | 167 | 906 | 0 | 0 |
| 8 | मुहम्मदाबाद गोहना | 26871 | 9626 | 1848 | 2402 | 618 | 1557 | 88 | 444 | 14 | 224 |
| 9 | रानीपुर | 32361 | 12536 | 1949 | 1952 | 680 | 1838 | 92 | 694 | 3 | 66 |

**स्रोत : जिला संख्यिकी पत्रिका जनपद मऊ वर्ष 2022**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

**लघु जोत–** लघु कृषकों में 1 से 2 हेक्टेयर आकार के जोतों को सम्मिलित किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में कुल जोतों की संख्या का 7.34 प्रतिशत लघुजोत है। परन्तु इनके स्वामित्व में कुल कृषि भूमि का 20.55 प्रतिशत सम्मिलित है। अतः इस वर्ग में जोतों की संख्या या जोतों के क्षेत्र से प्रतिशत कम है। लघु जोतों की संख्या सीमांत जोत की संख्या से अत्यन्त कम है किन्तु अर्धमध्यम, मध्यम एवं वृहत जोतों की संख्या की तुलना में अधिक है। अध्ययन क्षेत्र के दक्षिण भाग में सीमांत जोतों के तुलना में लघु जोतों का प्रतिशत कम है।

लघु जोतों की सर्वाधिक संख्या विकासखण्ड फतेहपुर मण्डाव (2285) तथा सर्वाधिक क्षेत्र विकासखण्ड घोसी (4172 हे0) तथा लघु जोतों की न्यूनतम संख्या विकासखण्ड परदहा (1796) तथा न्यूनतम क्षेत्र विकासखण्ड रानीपुर (1952 हे0) है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में लघु जोतों की संख्या और क्षेत्र विकासखण्डवार क्रमशः दोहरीघाट (संख्या 1885, क्षेत्र 3068 हे0), फतेहपुर मण्डाव (संख्या 2285, क्षेत्र 3532 हे0), घोसी (संख्या 1955, क्षेत्र 4172 हे0), बडरांव (संख्या 1819, क्षेत्र 3145), कोपागंज (संख्या 2177, क्षेत्र 3362 हे0), परदहा (संख्या 1796, क्षेत्र 2042 हे0), रतनपुरा (संख्या 1911, क्षेत्र 2238 हे0), मुहम्मदाबाद गोहना (संख्या 1848, क्षेत्र 2402 हे0), रानीपुर (संख्या 1949, क्षेत्र 1952 हे0) है।

सीमांत जोत का प्रतिशत अध्ययन क्षेत्र में सबसे अधिक है किन्तु लघु जोत का प्रतिशत अत्यधिक कम है अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न भागों में विषम धरातलीय क्षेत्र है जहाँ 50 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के समूह के अन्तर्गत है। धरातलीय विभिन्नता के कारण यातायात के साधनों का विकास कम हुआ है। उपजाऊ भूमि एंव सिंचाई के साधन कम है। सिंचाई की उपलब्धता होने पर वर्ष पर रोजगार मिल सकता है।

**अर्धमध्यम जोत–** अर्धमध्यम जोत के अन्तर्गत 2 से 4 हेक्टेअर जोत को सम्मिलित किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में अर्धमध्यम जोत के अन्तर्गत 2.55 प्रतिशत कृषक शामिल है। इसके अन्तर्गत कुल जोत के क्षेत्र का 13.27 प्रतिशत क्षेत्र शामिल है। उल्लेखनीय है कि इस वर्ग में जोतों के क्षेत्रफल का प्रतिशत जोतो की संख्या से लगभग 6 गुना अधिक है। अध्ययन क्षेत्र में जोतो के क्षेत्र का प्रतिशत सीमांत जोत, लघु जोत के बाद तीसरे स्थान पर है।

अर्धमध्यम जोतों की सर्वाधिक संख्या विकासखण्ड रतनपुरा (818) तथा न्यूनतम संख्या परदहा (610) विकासखण्ड में है। इसी प्रकार सर्वाधिक क्षेत्र वाला विकासखण्ड फतेहपुर मण्डाव (2352 हे0) तथा न्यूनतम क्षेत्र वाला विकासखण्ड मुहम्मदाबाद गोहना (1557 हे0) है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में अर्धमध्यम जोतों की संख्या और क्षेत्र क्रमशः विकासखण्डवार दोहरीघाट (संख्या 639, क्षेत्र 1789 हे0), फतेहपुर मण्डाव (संख्या 767, क्षेत्र 2353 हे0), घोसी (संख्या 680, क्षेत्र 1878 हे0), बडरांव (संख्या 616, क्षेत्र 1823 हे0), कोपागंज (संख्या 720, क्षेत्र 1982 हे0), परदहा (संख्या 610, क्षेत्र 1566 हे0), रतनपुरा (संख्या 818, क्षेत्र 2201 हे0), मुहम्मदाबाद गोहना (संख्या 618, क्षेत्र 1557 हे0), रानीपुर (संख्या 680, क्षेत्र 1838 हे0) है।

अध्ययन के इस वर्ग में कृषक कुछ सहायक कार्य कर अपनी स्थिति को सामान्य बनाए रखते हैं। इस वर्ग की जनसंख्या में बेरोजगारी स्थिति उपरोक्त क्षेत्रों की अपेक्षा कम पायी जाती है।

**मध्यम जोत–** मध्यम जोत के अन्तर्गत 4 से 10 हेक्टेअर जोत को शामिल किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में मध्यम आकार जोत 0.43 प्रतिशत है। किन्तु कुल जोतों के क्षेत्र का 4.46 प्रतिशत मध्ययम जोत के स्वामित्व में है। अतः इस वर्ग में जोतों के क्षेत्रफल का प्रतिशत जोतो की संख्या के प्रतिशत लगभग नौ गुना अधिक है। मध्यम जोत का विस्तार अर्धमध्यम जोतो के समान कम पाया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र में मध्यम जोतों की सर्वाधिक संख्या विकासखण्ड रतनपुरा (167) तथा न्यूनतम संख्या मुहम्मदाबाद गोहना विकासखण्ड (88) में है। इसी प्रकार अध्ययन क्षेत्र में मध्यम जोत सर्वाधिक क्षेत्र वाला विकासखण्ड रतनपुरा (906 हे0) तथा न्यूनतम क्षेत्र मुहम्मदाबाद गोहना (444 हे0) है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में मध्यम जोतों की संख्या और क्षेत्र विकासखण्डवार क्रमशः दोहरीघाट (संख्या 105, क्षेत्र 514 हे0), फतेहपुर मण्डाव (संख्या 128, क्षेत्र 646 हे0), घोसी (संख्या 119, क्षेत्र 663 हे0), बडरांव (संख्या 99, क्षेत्र 643 हे0), कोपागंज (संख्या 136, क्षेत्र 645 हे0), परदहा (संख्या 107, क्षेत्र 544 हे0), रतनपुरा (संख्या 167, क्षेत्र 906 हे0), मुहम्मदाबाद गोहना (संख्या 88, क्षेत्र 444 हे0), रानीपुर (संख्या 92, क्षेत्र 694 हे0) है।

वास्तव में मध्ययम जोत वाले यह क्षेत्र धनी जनसंख्या के क्षेत्र है। उपजाऊ मिट्टी के साथ–साथ, सिंचाई सुविधा, परिवहन के साधन औद्योगिक विकास में जनसंख्या को आकर्षित किया है। अतः भूमि से जनसंख्या बहुत कम है। मध्यम जोते के कृषक प्रति हेक्टेयर अधिक उपज प्राप्त करने हेतु अधिक कृषि निवेश करते है तथा कृषि में लगाई गई लागत को प्राप्त करने में अधिक सक्षम होते है।

**तालिका संख्या : 1.3**

**जनपद मऊ : जोतों की संख्या एवं क्षेत्रफल में परिवर्तन(वर्ष 2005–06 से 2015–16)**

| क्रम सं0 | जोत का वर्गीकरण | 2005–06 | | | | 2015–16 | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | संख्या | प्रतिशत | क्षेत्रफल | प्रतिशत | संख्या | प्रतिशत | क्षेत्रफल | प्रतिशत |
| 1 | सीमांत जोत | – | 83.46 | 74452 | 51.27 | 217243 | 89.64 | 78856 | 61.07 |
| 2 | लघु जोत | 21885 | 10.64 | 32451 | 22.34 | 17790 | 7.34 | 26534 | 20.55 |
| 3 | अर्द्धमध्यम जोत | 10073 | 4.90 | 27226 | 18.74 | 6199 | 2.55 | 17144 | 13.27 |
| 4 | मध्यम जोत | 1970 | 0.95 | 10082 | 6.94 | 1052 | 0.43 | 5765 | 4.46 |
| 5 | वृहत जोत | 59 | 0.02 | 1001 | 0.68 | 55 | 0.02 | 811 | 0.62 |
| | | 205527 | 100 | 145212 | 100 | 242339 | 100 | 129110 | 100 |

**स्रोत : जिला सांख्यिकी पत्रिका जनपद मऊ वर्ष 2022**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

**वृहत जोत–** अध्ययन क्षेत्र में वृहत जोत के अन्तर्गत मात्र 0.02 प्रतिशत संख्या है, जबकि इनका स्वामित्व 0.62 प्रतिशत क्षेत्र पर है अर्थात संख्या और क्षेत्र दोनों के मध्य कोई स्थाई अनुपात नही है। अध्ययन क्षेत्र में वृहत जोत की सर्वाधिक संख्या फतेहपुर मण्डाव (32) विकासखण्ड में है जबकि न्यूनतम कोपागंज, परदहा, रतनपुरा विकासखण्डों में है इसी प्रकार वृहत जोत के क्षेत्र के अन्तर्गत सर्वाधिक क्षेत्र विकासखण्ड फतेहपुर मण्डांव (465 हे0) तथा न्यूनतम कोपागंज, परदहा, रतनपुरा विकासखण्डों में है।

इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में वृहत जोतों की संख्या और क्षेत्र क्रमशः विकासखण्ड दोहरीघाट (संख्या 2, क्षेत्र 9 हे0), फतेहपुर मण्राव (संख्या 32, क्षेत्र 465 हे0), घोसी (संख्या 3, क्षेत्र 36 हे0), बडरांव (संख्या 1, क्षेत्र 11 हे0), मुहम्मदाबाद गोहना (संख्या 14, क्षेत्र 224 हे0), रानीपुर (संख्या 3, क्षेत्र 66 हे0) तथा विकास खण्ड कोपागंज, परदहा एवं रतनपुरा में वृहत जोत नही है। यहाँ के कृषक आर्थिक रूप से सम्पन्न है।

**निष्कर्ष एवं सुझाव–** आँकड़ों के सांख्यिकीय विवेचन व विश्लेषण से यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि जनपद मऊ विभिन्न प्रकार के भू–जोतों से परिपूर्ण हैं। यहाँ निवास करने वाली जनसंख्या के सन्दर्भ में भू–जोतों का आकार समयानुसार परिवर्तित हो रहा है। लगातार बढ़ती जनसंख्या के कारण भू–जोतों के स्वरूप में परिवर्तन की और आवश्यकता है। अध्ययन क्षेत्र में वनों का वितरण पार्यावरणीय मानक से कम है। इस क्षेत्र में वृक्षारोपण कर वनों में वृद्धि करने की और आवश्यकता है। इस क्षेत्र में कृषि भूमि सुधार कार्यक्रमों द्वारा कृषि भूमि में विस्तार करने की आवश्यकता है। ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि सुधार में तेजी लाने की आवश्यकता है। बढ़ती जनसंख्या के दबाव के कारण कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि में लगातार वृद्धि होती जा रही है और यह स्वभाविक भी है। इसके परिणाम स्वरूप कृषि भूमि का क्षेत्र सिकुड़ता जा रहा है। कृषि भूमि के विकास के लिए कृष्य बेकार भूमि, पर तो भूमि, ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि आदि में बड़े पैमानें पर सुधान की आवश्यकता है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वाडिया व कृष्णन (1956) इन्ट्रोडक्शरी नोटस ऑन ज्योलॉजीकल फक्शन ऑफ दी सॉयल्स ऑफ इण्डिया, एग्रीकल्चर एण्ड लिवस्टोक।
2. चतुर्भुज मामोरिया (1984) भारत का आधुनिक वृहद भूगोल, आगरा, पृष्ठ– 214.
3. जे० सिंह (1964) : ट्रांस्पोट ज्योग्राफी ऑफ साउथ बिहार बी०एच०यू० प्रेस, वाराणसी, पृष्ठ– 1,2.
4. चौहान, शिव ध्यान सिंह ( 1974) : भारतीय परिवहन व्यवस्था, उ० प्र० हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ पृ० 25.
5. वटिंग, टी० ब्रियने (1969) द ज्योग्राफी ऑफ स्वाइल्स, लन्दन।
6. किंग, थामसन (1953) वाटर, मिरोकिल ऑफनेचर, न्यूयार्क।
7. केण्टर, लियोनार्ड, एम० (1964) ए वर्ल्ड ज्योग्राफी ऑफ इरीगेशन, लन्दन।
8. ई० अहमद व डी० के० सिंह रीजनल प्लानिंग विद पर्टिकुलर रेफरेन्स टू इण्डिया, नई दिल्ली, 1980, वाल्यमू – 2 पृष्ठ– 11.
9. एडरसन, आर० सी० एल० मॉस, ए० (1971) सिल्यूलेशन ऑफ इरीगेशन सिस्टमः दी एफैक्ट ऑफवाटर सप्लाई एण्ड ऑपरेटिंग रूल्स ऑन प्रोडक्शन एण्ड इनकम ऑफइरीमेटिड फरमर्स, इकोनोमिक रिसोर्स सर्वे टेक्नीक, बुलेन, 1431.
10. सी क्लार्क (1951) दी कन्डीशन ऑफएकोनोमिक प्रोग्रेस, लन्दन, पृष्ठ– 401.
11. आर० सी० तिवारी एवं वी० एन सिंह (1998) कृषि भूगोल, इलाहाबाद, पृष्ठ– 48,49.
12. वाई० जी० जोशी (1972) नर्मदा बेसिन का कृषि भूगोल, भोपाल, पृष्ठ– 84.
13. Wadia, D.N. 9 (1939) Geology of India, London, P. 385.
14. Singh, R.L. (Ed.) (1971) A Regional Geography of India, N.G.S.I. Varanasi, PP. 190-194.
15. Pathak, V.N. History of Kosala up to the Rise of the Mauryas, P. 238.
16. Oldham, R.D.(1917) The Structure of Himalayas & Gangetic Plain, Memoires of the Geological Survey of India, Calcutta, Vol, XI, II, Pt 11, Pg 82.
17. Banerjee, A.K. : The Nath Yogi Sampraday and The Gorakhnath Temple, P. 12.
18. District Gazetteer (1987) District Gazetteer-Gorakhpur P1 Deptt of District Gazetters, Lucknow, Uttar Pradesh, Pg. 3-

*****